शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

नवम वर्ष अंक - 03

माह, अगस्त 2023

श्रीमती जान्हवी यदु, रायपुर

श्रीमती मीरा रजक, बिलासपुर

श्रीमती उषा शर्मा, दुर्ग

राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

एजेंडा एक: शून्य ड्राप-आउट गाँव और ग्रीन स्कूल विकसित करना

इस वर्ष प्रवेशोत्सव के दौरान हम सबने तय किया था कि हम अपने गाँव या वार्ड को शून्य ड्राप-आउट गाँव/ वार्ड बनाएंगे। इसके लिए आपने अवश्य प्रयास किया होगा। हम अपने गाँव या वार्ड को शून्य ड्राप और गाँव तब घोषित कर सकेंगे जब:

1. हमारे क्षेत्र से स्कूल जाने योग्य सभी बच्चे स्कूल में पढ़ रहे हों
2. हमारे क्षेत्र से स्कूल की पढाई छोड़ चुके बच्चों को ढूंढकर उन्हें सेतु पाठ्यक्रम के माध्यम से उनके आयु-अनुरूप कक्षा के स्तर तक पहुंचाना
3. स्कूलों में इस प्रकार से पढाई एवं बच्चों के साथ संबंध कि कोई भी बच्चा स्कूल या पढाई बीच में छोड़ने की बात बिलकुल भी न सोचे
4. शिक्षकों, पालकों एवं बच्चों के मध्य प्रगाढ़ संबंध एवं समय समय पर तीनों का आपस में मिलना एवं बच्चों की प्रगति के संबंध में जानकारी देना
5. हमारे क्षेत्र से कोई भी बच्चा पढाई से वंचित न हो

तो क्या आपने अपने क्षेत्र को शून्य ड्राप आउट कर लिया है ? यदि नहीं तो आज ही अपने शाला प्रबन्धन समिति, समुदाय से शिक्षा में रूचि लेने वाले व्यक्तियों, माताओं को जोड़कर उनके साथ बैठक लेकर ऐसे बच्चों की पहचान करें जो स्कूल से बाहर हैं या स्कूल जाने के मामले में अनियमित हैं। इन्हें स्कूल में प्रवेश एवं नियमित स्कूल जाने के लिए क्या क्या उपाय करने होंगे उन पर चर्चा कर एक एक बच्चे को स्कूल से जोड़ें, उन्हें नियमित स्कूल जाने हेतु प्रेरित करें !

और जब सभी बच्चे नियमित रूप से स्कूल जाने लगे, कुछ सीखने लगे तब आप अपने क्षेत्र को शून्य ड्राप आउट गाँव, वार्ड या पंचायत घोषित करें !

हम अगले माह यह फीडबैक लेंगे कि आपमें से किन किन ने अपने क्षेत्र को शून्य ड्राप आउट घोषित कर लिया है। इसमें अन्य विभागों एवं पंचायतों का सहयोग भी लेवें।

बरसात का समय है और यह सही समय है जब आप अपने स्कूल को ग्रीन स्कूल के रूप में बदलना शुरू कर देवें, समुदाय का सहयोग लेकर वन विभाग की योजनाओं को ध्यान में रखते हुए अपने स्कूल परिसर में जहां और जितना संभव हो, बच्चों एवं समुदाय के साथ मिलकर वृक्षारोपण करवाएं। आप एक विशिष्ट थीम को लेकर भी वृक्षारोपण कर सकते हैं, जैसे कुछ स्कूल अपने यहाँ औषधीय पौधों का पार्क बनाते हैं तो कुछ मध्याह्न भोजन में उपयोग में लाए जाने हेतु कटहल, मुनगा तो कुछ भाजी की खेती करते हैं,

स्थानीय स्तर पर यदि स्कूल को समुदाय के किसी सदस्य द्वारा अपने किसी की याद में जमीन देने की तैयारी हो तो ऐसे लोगों को प्रेरित और सम्मानित करते हुए स्कूल के लिए जमीन दान में लेते हुए उसे भी ग्रीन करने हेतु आवश्यक व्यवस्थाएं करें। अभी सही समय है जब आप वर्षा ऋतू के जल को जमीन में संचित रखने रूफ वाटर हार्वेस्टिंग करते हुए अपने क्षेत्र के अन्य घरों में भी रूफ वाटर हार्वेस्टिंग के लिए प्रेरित कर सकते हैं, सभी स्कूलों में यूथ एवं इको क्लब का गठन अवश्य कर लेवें।

एजेंडा दो: शाला प्रबन्धन समिति के साथ कार्य

शाला प्रबन्धन समिति के साथ हमें प्रतिमाह आवश्यकतानुसार एजेंडा का निर्धारण कर नियमित बैठक का आयोजन करते रहना चाहिए। राज्य स्तर के एजेंडा को अनिवार्यतः रखते हुए कुछ एजेंडा के बिंदु आपको अपनी स्थानीय प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए शामिल करना होगा। आगामी दो राज्यव्यापी शाला प्रबन्धन समिति की बैठक हेतु निम्नानुसार एजेंडा निर्धारित किया जाता है:

शाला प्रबन्धन समिति की प्रथम बैठक (16 जून, 2023):

1. एजेंडा एक: इस सत्र में प्रवेशोत्सव के माध्यम से स्कूलों में नामांकन में हुआ परिवर्तन
2. एजेंडा दो: स्कूल में प्रारंभ किए जा रहे नवीन योजनाओं/ गतिविधियों का 15 अगस्त को शुभारंभ
3. एजेंडा तीन: सत्रारंभ में सभी बच्चों को पाठ्य-पुस्तक एवं गणवेश वितरण की स्थिति
4. एजेंडा चार: ग्रीष्मावकाश के दौरान छलांग समर कैम्प कार्यक्रम की समीक्षा
5. एजेंडा पांच: छोटे बच्चों को स्थानीय भाषा में सीखने हेतु समुदाय से सहयोग
6. एजेंडा छह: शाला में सुधार हेतु शाला विकास योजना बनाकर उसका अनुसरण
7. एजेंडा सात: शाला का सुरक्षा ओडिट कर बच्चों को सुरक्षित वातावरण देना
8. एजेंडा आठ: बच्चों को भाषा एवं गणित में बेहतर प्रदर्शन हेतु विभिन्न तैयारियां एवं कार्यक्रम

शाला प्रबन्धन समिति की द्वितीय बैठक (10 अगस्त, 2023):

1. एजेंडा एक: बच्चों की शाला में नियमित उपस्थिति की समीक्षा एवं सुधार
2. एजेंडा दो: स्कूल को ग्रीन स्कूल के रूप में विकसित करने की दिशा में किये जा रहे विभिन्न कार्य
3. एजेंडा तीन: बच्चों के सीखने के स्तर की जांच हेतु सामाजिक अंकेक्षण
4. एजेंडा चार: घर पर पालकों के सहयोग से सीखने में सहयोग संबंधी कार्यों की समीक्षा
5. एजेंडा पांच: स्थानीय भाषा का उपयोग कर सीखने हेतु कहानी पुस्तिकाएं विकसित करना
6. एजेंडा छह: शाला अनुदान/ अन्य उपलब्ध संसाधनों के बेहतर उपयोग हेतु प्रस्तावों का अनुमोदन
7. एजेंडा सात: समुदाय के सहयोग से अतिरिक्त समय में विशेष कोचिंग कक्षाओं का आयोजन
8. एजेंडा आठ: चर्चा पत्र के माध्यम से शिक्षकों से अपेक्षाएं एवं उनके क्रियान्वयन की स्थिति

इसी प्रकार से दो और राज्यव्यापी बैठकों के लिए राज्य स्तर से आठ-आठ एजेंडा बिंदु भेजे जाएंगे। कम से कम दो बिंदु स्कूल की स्थानीय आवश्यकताओं एवं प्राथमिकता के अनुसार शामिल किए जा सकेंगे। इस प्रकार की राज्यव्यापी बैठकों के आयोजन हेतु स्कूलों को बजट जारी किया जाएगा।

एजेंडा तीन: प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी को सक्रिय करना

छत्तीसगढ़ में हमारे शिक्षकों द्वारा गठित प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी का पूरे देश में बहुत नाम हुआ है और हमारे राज्य को शिक्षकों के प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के कार्यों की वजह से बहुत पहचान मिली है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी शिक्षकों को प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बनाकर गुणवत्ता संबंधी कार्यों में सहयोग हेतु सुझाव दिया गया है,

इस सत्र में भी शुरुआत से सभी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी को सक्रिय रखना है और उनके द्वारा किए जा रहे विभिन्न कार्यों को एक दूसरे के साथ साझा करते रहना है, इस सत्र में प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी से अनुरोध है कि वे स्वयं पहल करते हुए निम्नलिखित क्षेत्रों को आपस में बांटकर पूरे राज्य में अपने टीम के माध्यम से सक्रिय एवं रचनात्मक योगदान देने हेतु सभी आवश्यक कार्यवाहियां करेंगे-

1. NAS एवं ASER के परिणामों में सुधार लाने हेतु बच्चों के साथ सघन निरंतर अभ्यास
2. विभिन्न विषयों को बेहतर तरीके से समझाते हुए सीखने में सहयोग देने PLC
3. प्राथमिक कक्षाओं में खिलौनों से सीखने एवं खिलौना कार्नर बनाने हेतु PLC
4. सभी कक्षाओं में पियर लर्निंग अर्थात जोड़ी में एक दूसरे से सीखने हेतु PLC
5. स्थानीय कहानियों को पोडकास्ट के रूप में विकसित करने हेतु PLC
6. शिक्षकों को तकनीकी सहायता एवं समर्थन देने हेतु तकनीकी रूप से समर्थ PLC
7. बच्चों के पठन एवं गणितीय कौशल, हस्तलेख आदि सुधारने समर्थन हेतु PLC
8. बच्चों के साथ क्विज एवं व्यक्तित्व विकास सबंधी कार्यक्रमों के आयोजन हेतु PLC
9. शिक्षकों एवं बच्चों के रचनात्मक कौशलों विशेषकर उनके लेखन कौशल को विकसित करने हेतु PLC
10. शिक्षकों द्वारा की जा रहे विभिन्न नवाचारों को प्रोत्साहन देने उसे विस्तारित करने एवं उनके दस्तावेजीकरण हेतु PLC

इन सबके लिए विकासखंड एवं जिले स्तर पर अलग अलग प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बनाकर अभी से खूब सक्रिय होकर सुधारात्मक कार्य करेंगे, इस हेतु प्रत्येक पीएलसी के टीम लीडर हर संभव प्रयास करेंगे एवं अपने पीएलसी के कार्यों को ग्रुप में साझा करेंगे। राज्य में बच्चो की गुणवत्ता से संबंधित कार्यों को करने हेतु पूरी स्वतन्त्रता एवं प्रोत्साहन है।

एजेंडा चार: रचनात्मक लेखन के विकास में निर्देशित लेखन अभ्यास की भूमिका :-

लिखना एक संवाद है – स्वयं से या पाठकों से। जब हम मौखिक संवाद करते हैं तो विचार, कल्पना एवं सोच हमारी अपनी होती है। ज़ाहिर है मौलिकता एवं रचनात्मकता लेखन की आत्मा है। बच्चे जब स्कूल आते हैं तब भाषा के इस लिखित स्वरूप को उन्हें सजगता के साथ सीखना होता है। पढ़ना-लिखना सीखने के दो पहलू है –

1. **बुनियादी पक्ष-** इसके अंतर्गत लिपि का ज्ञान, ध्वनियों की पहचान, ध्वनि का अक्षरों से संबंध, अक्षरों की बनावट, अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाना आदि शामिल है। यह "सीमित कौशल" है अर्थात बच्चे यदि इस बुनियादी कौशल को हासिल कर लें तो इसे जीवन भर सीखते रहने की आवश्यकता नहीं होती है।

2. **रचनात्मक पक्ष-** एक बार बच्चा पढ़ना-लिखना सीख जाए तो पढ़कर सीखने की यात्रा शुरू हो जाती है। पढ़ना-लिखना केवल स्कूल या कक्षागत प्रक्रिया का मामला नहीं है बल्कि जीवन में विविध उद्देश्यों के लिए इस कौशल का निरंतर उपयोग करना है। यह "असीमित कौशल" है और जीवन भर विकसित होते रहती है।

   कतिपय शिक्षक यह मानकर चलते हैं कि यदि बच्चा बुनियादी कौशल हासिल कर लेता है तो अपने विचार, कल्पना एवं अपने अनुभवों का इस्तेमाल करते हुए रचनात्मक लेखन स्वयं ही कर लेगा। पर वास्तव में बच्चों में इस कौशल को विकसित करने के लिए निरंतर सहयोग एवं अभ्यास देने की आवश्यकता होती है।

निर्देशित लेखन :- रचनात्मक लेखन विकसित करने की दिशा में निर्देशित लेखन अभ्यास एक महत्वपूर्ण कड़ी है। निर्देशित लेखन के अंतर्गत लिखने के कौशल को विकसित करने की दिशा में विचार करने के लिए कुछ सामग्री या संकेत दी जाती है। इन सामग्रियों एवं संकेतों का विश्लेषण कर बच्चे किसी निष्कर्ष पर पहुँच रहे होते हैं जिसे वे एक-दो शब्दों या वाक्यों में लिख सकते हैं। इस तरह बच्चों को 'क्या लिखना है?' उस दी गई सामग्री, सूचना या संकेत से मिल जाता है। इस तरह बच्चे का लिखना उस सामग्री के आधार पर बने विचार तक सीमित होता है, जैसे चित्र देखकर उसके बारे में लिखना, खालीस्थान में उचित शब्द भरना, आदि। इस प्रकार के लेखन में सभी बच्चों का जवाब एक जैसा ही होगा।

निर्देशित लेखन बच्चों को कैसे मदद करता है?

निर्देशित लेखन बच्चों में बुनियादी लेखन कौशल विकसित करने में मदद करता है। यह उन बच्चों के लिए भी उपयोगी है जिन्होने बुनियादी कौशल सीख लिया है। निर्देशित लेखन अभ्यास में बच्चों को Higher order skills जैसे तुलना, तर्क, विश्लेषण, निष्कर्ष निकालना, समस्या समाधान एवं निर्णय लेना का भी इस्तेमाल करने का मौका मिलता है और उनका लिखना अर्थपूर्ण लिखना होता है। किसी चित्र या संकेत के आधार पर किसी निष्कर्ष को लिखने से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है कि वे जो सोचते हैं उसे लिख सकते हैं। बोर्ड को देखकर लिखना, पुस्तक के किसी अंश को लिखना या इमला लिखना बुनियादी कौशल विकसित करने के लिहाज़ से कारगर हो सकते हैं पर यह अभ्यास केवल Lower order skills तक ही सीमित होता है। लिखने की यह प्रक्रिया बच्चों के लिए बोझिल न हो इसीलिए, इसे रोचक तरीके से बच्चों को लिखने के लिए देना चाहिए। इसमें बच्चों को तर्क करने का मौका मिले, बच्चों को सोचने का मौका मिले कि, क्या लिखना है?

निर्देशित लेखन की ज़रूरत क्यों हैं?

बच्चा जब पहली बार स्कूल में आता है तो वह अपने घर की मौखिक भाषा में निपुण होता है। धीरे-धीरे बच्चा शाला में सिखायी जाने वाली भाषा से भी अपनी मौखिक अभिव्यक्ति करने लगता है। शाला में सिखायी जाने वाली इस भाषा को लिखना सीखने के लिए बच्चे को लिपि के संकेतों की सहायता लगती है। शिक्षक विविध अभ्यासों से बच्चों के बुनियादी लेखन कौशल विकसित करने के लिए कक्षा में भरसक प्रयास करते है। बच्चे इस प्रयास से बुनियादी लेखन कौशल हासिल कर लेते हैं। किन्तु केवल बुनियादी लेखन कौशल से लेखन में मौलिकता नहीं आती है। इसीलिए बच्चों में बुनियादी लेखन कौशल से रचनात्मक लेखन कौशल विकसित करने के लिए निर्देशित लेखन के स्तर पर भी नियमित रूप से कक्षा में कार्य करना जरूरी होता है।

किसी भी पाठ को पढ़ाये जाने के बाद प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षक साथी को एक बार पाठ के पीछे के प्रश्नों में यह देखना चाहिए कि प्रश्न किस प्रकार के हैं। कितने प्रश्न कौशल आधारित है, कितने प्रश्न निर्देशित लेखन के और कितने प्रश्न रचनात्मक लेखन के हैं? मेरी कक्षा के कौन से विद्यार्थी किन प्रश्नों को कर पायेंगे और कौन नही कर पायेंगे और जो नही कर पायेंगे उनके लिए किस प्रकार के प्रश्न लिखना सीखने में मदद करेंगे? उस तरह के प्रश्नों को निर्मित कर उनको लिखना सीखने में मदद करना है।

निर्देशित लेखन के कुछ उदाहरण इस प्रकार से है :-

1. नीचे दी हुई कहानी में कुछ शब्द छूटे हुए हैं। कहानी को पढ़ते हुए खाली स्थान पर सही शब्द लिखें।

बरगद का एक ..... था। उस ..... के ऊपर एक चिड़िया रहती थी। उसी पेड़ के नीचे एक चूहा भी ..... था। ..... और ..... दोनों अच्छे दोस्त थे। एक दिन पेड़ के नीचे शिकारी ने जाल ..... । चिड़िया ..... में फंस गई। चिड़िया ने अपने ..... चूहे से मदद मांगी। चूहे ने जाल को ..... दिया।

2. क्या है लंबा क्या है गोल जल्दी बोल जल्दी बोल !

लम्बी चीजों के सामने लम्बा और गोल चीजों के सामने गोल लिखें

खंभा-	संतरा –
गेंद –	डंडा –
साँप -	चूड़ी –

3. चित्र देखकर खाली स्थान भरो

- बच्चे बरसात में ..... रहे हैं।
- एक लड़की ..... चला रही हैं।
- नाव ..... में चल रही है।
- ..... बच्चे नाच रहे हैं।

4. चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए कि इसमें क्या-क्या गलत है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

एजेंडा पांच: बच्चों को पढ़ना आया कि नहीं

छत्तीसगढ़ में बहुत बड़ी संख्या में संकुल समन्वयकों का चयन कर उन्हें गुणवत्ता सुधार की जिम्मेदारी दी गयी है। उन्हें अपनी शाला को संकुल में एक आदर्श शाला के रूप में प्रस्तुत करना है और साथ ही अपने संकुल की सभी शालाओं में राज्य से निर्देशित सभी गुणवत्ता संबंधी कार्यों को प्राथमिकता से पूरा करना है। वर्तमान में राज्य की सर्वोच्च प्राथमिकता FLN है। इसमें सभी बच्चों को पढ़ना लिखना और गणित के सवाल हल करना अच्छे से आ जाना चाहिए। संकुल समन्वयक जब भी किसी शाला में जाएं वहां अनिवार्य रूप से कुछ बच्चों को अपरिचित पाठ पढ़वाकर देखें। इस हेतु वे बच्चों के स्तर की कुछ पठन सामग्री लेकर जा सकते हैं या पुस्तकालय से कुछ पुस्तकें पढने देते हुए सभी बच्चों को पढ़ना आता है यह सुनिश्चित करें। कुछ गणित के सवाल देकर भी देखें कि सभी बच्चे सवाल ठीक से समझ के साथ हल कर पा रहे हैं अथवा नहीं। आपके अगले भ्रमंण के पहले स्थिति में सुधार लाए जाने हेतु शिक्षको को आवश्यक टिप्स देवें। संकुल स्तरीय बैठक के बदले हुए स्वरूप में अब आपको सभी स्कूलों में निर्धारित कार्य पूरा होने संबंधी सर्टिफिकेट देना होगा। उसके बाद ही बैठक में उपस्थित प्रति शिक्षक की दर से आपको बजट स्वीकृत हो सकेगा। पहली बैठक में आपको लर्निंग आउटकम पर समझ विकसित करते हुए सभी कक्षाओं में एल ओ के पोस्टर प्रदर्शित करने संबंधी सर्टिफिकेट देना होगा।

एजेंडा छह: अब कपड़े फटने पर सिलने की आत्मनिर्भरता

झिंगटपुर पूर्व माध्यमिक शाला में कार्यरत शिक्षिका **श्रीमती मीरा रजक** को बच्चों का फटे कपने पहनकर आना अच्छा नहीं लगता, समुदाय के सहयोग से उन्होंने दो सिलाई मशीन स्कूल के लिए ली है। बच्चों को सिलाई करना सिखाया है। निःशुल्क गणवेश को वितरण करने के पूर्व वे अपने विद्यार्थियों के साथ मिलकर उसपर दूसरी सिलाई करती है। बच्चों को व्यवसायिक शिक्षा के अंतर्गत वे सिलाई का प्रशिक्षण देती हैं। किसी बच्चे का यूनीफोर्म खेलने कूदने के दौरान फट जाने पर अब वे स्वयं ही उसकी सिलाई स्कूल में दीर्घावकाश में कर लेते हैं। व्यवसायिक शिक्षा का सही अर्थों में लाभ श्रीमती मीरा रजक अपने बच्चों को दिलवा रही हैं। सभी से आग्रह है कि बस्ताविहीन स्कूल का लाभ सभी बच्चों को दिलवाएं !

एजेंडा सात: बच्चों के साथ बच्चों जैसा बनकर सीखने में सहयोग !

बच्चों को बेहतर शिक्षा देने हेतु शिक्षकों को मुख्य रूप से दो प्रमुख बातों का ध्यान रखना होता है। ये दोनों बातें बहुत सरल होती हैं लेकिन उनका पालन करना उतना ही कठिन होता है। पहली महत्वपूर्ण बात बच्चों का सीखना तब अच्छे से हो सकता है जब शिक्षक भी बच्चों के स्तर पर आकर बच्चों को सीखने में सहयोग करे। दूसरी बात सीखने का सबसे प्रभावी तरीका होता है शिक्षक सीखने के लिए निर्धारित बिंदु का स्वयं पहले पालन करे जिसे देखकर बच्चे उनका अनुकरण कर सकें।

इन दोनों बातों को बहुत अच्छे से स्वयं कर दिखाया है रायपुर की शिक्षिका **श्रीमती जान्हवी यदु** ने इस नए सत्र में जान्हवी ने अपने आपको एक विद्यार्थी के रूप में तैयार कर शाला में उपस्थिति दी। उन्हें देखकर कौन शिक्षिका है और कौन उनके विद्यार्थी हैं यह पहचानना मुश्किल हो गया। इस प्रकार उन्होंने विद्यार्थियों के बीच स्वयं एक विद्यार्थी के रूप में अपने आपको तैयार कर सीखने में सहयोग देने हेतु सुविधादाता का काम शुरू किया। उनके इस कार्य में उनके परिवार एवं शाला के सहकर्मियों ने पूरा पूरा सहयोग दिया। सोशियल मीडिया में जाह्नवी की इस पहल को पढ़कर इस प्रकार की पहल प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में भी दिखाई देने लगी है।

विगत सत्रों में उनका यह अनुभव रहा कि बार-बार बोलने के बावजूद बच्चे ठीक से यूनीफोर्म पहन कर नहीं आते थे। लडकियां बाल को सही तरीके से बाँध कर दो चोटी बनाकर नहीं आती थी। साफ़-सुथरे जूते-मोज़े भी नहीं पहनते थे। इन सबके लिए जान्हवी मैडम द्वारा बार-बार निर्देश दिए जाने के बावजूद अपेक्षित सुधार नहीं दिखाई दे रहा था। तभी जान्हवी मैडम को शिक्षाशास्त्र में पढी वो बात याद आई जिसमें यह कहा गया है कि आप बच्चों में जो कुछ देखना चाहते हो, उसे पहले अपने आचरण में उतारना आवश्यक है।

शिक्षिका श्रीमती जान्हवी यदु को अपने इस अनोखे कार्य के दौरान बहुत से रोचक अनुभव भी हुए। प्रार्थना सभा के दौरान उनके सहकर्मी शिक्षक साथी उसे पहचान नहीं पाए और बच्चों की भीड़ में बच्ची मानकर वैसा बर्ताव किया। कुछ नई विद्यार्थियों ने उसे दीदी बोलकर संबोधित किया। पुराने विद्यार्थियों ने उनकी मैडम को इस रूप में देखकर उनकी खूबी प्रशंसा की और इस रूप में उनके बहुत अच्छे लगने की जानकारी दी।

छत्तीसगढ़ के बहुत से प्रतिभाशाली एवं नवाचारी शिक्षक अपने विद्यार्थियों को रोचक एवं प्रभावी तरीके से सीखने में सहयोग करने हेतु नवाचारी उपाय करते रहते हैं। इसी कड़ी में रायपुर शहर के शासकीय गोकुल राम वर्मा प्राथमिक शाला रामनगर की शिक्षिका श्रीमती जान्हवी यदु ने अपने इस पहल से न केवल अपने विद्यार्थियों का विश्वास जीता है बल्कि प्रदेश के अन्य शिक्षकों के लिए एक बच्चों के साथ अपने संबंध को प्रगाढ़ करने हेतु एक नया दृष्टिकोण भी दिया है।उनका मानना है कि उनकी इस पहल का प्रभाव बच्चों की उपलब्धि में सुधार के रूप में देखने हेतु कुछ समय लगेगा पर अभी से उनके और उनके विद्यार्थियों के बीच बेहतर संबध स्थापित हो चुका है जो सीखने में सफलता के लिए पहला कदम है।

एजेंडा आठ: लक्षित क्षेत्रों में उच्च विद्यालयों में छात्रों के लिए आवासीय शिक्षा की योजना

केंद्र सरकार द्वारा 6 दिसंबर 2021 को श्रेष्ठ योजना Scheme for Residential Education for Students in High Schools in Targeted Areas (SHRESHTA) का शुभारंभ किया गया। इस योजना के माध्यम से अनुसूचित जाति के मेधावी छात्रों को गुणवत्तापूर्ण आवासीय शिक्षा उपलब्ध करवाई जाती है जो उनको निजी स्कूलों के माध्यम से प्रदान की जाती है। SHRESTHA Yojana के माध्यम से अनुसूचित जाति के छात्रों का सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान के साथ उनका समग्र विकास हो सकेगा। इस योजना के माध्यम से कक्षा 9 वीं से 12 वीं के विद्यार्थियों के स्कूल छोड़ने की दर को भी नियंत्रित किया जा सकेगा।

एक अच्छा शिक्षक वही होता है जो बच्चों के हित को ध्यान में रखकर उसके जीवन स्तर में सुधार लाने हेतु अपनी ओर से पूरी मेहनत करें। दुर्ग जिले की स्वामी आत्मानंद जेआरडी हिंदी माध्यम विद्यालय दुर्ग की शिक्षिका **श्रीमती उषा शर्मा** कुछ ऐसा ही प्रयास कर रही हैं। इस योजना की जानकारी बहुत लोगों को नहीं थी, इन्होने इंटरनेट से इस योजना को जाना समझा और योग्य पात्र बच्चों को इसकी परीक्षा के लिए अलग से समय देकर तैयार भी किया। उनके मार्गदर्शन में समग्र शिक्षा द्वारा संचालित संजीवनी बालिका छात्रावास में रह रही छात्रा कु.संजना बांधे ने 400 अंक में 324 अंक हासिल करते हुए ऑल इंडिया में पांचवा रैंक हासिल किया जबकि दूसरी छात्रा कु. ऐश्वर्या कोसले ने 160 अंक अर्जित करते हुए 1565 वां रैंक प्राप्त किया। श्रीमती शर्मा द्वारा इन्हे शाला संचालन की अवधि के पश्चात अतिरिक्त समय देते हुए नियमित रूप से गणित,विज्ञान सामाजिक विज्ञान के साथ साथ इंटरनेट की मदद से सामान्य ज्ञान, करेंट अफेयर्स का भी ज्ञान दिया गया। समय समय पर उनके द्वारा मॉक टेस्ट तथा स्पीड टेस्ट भी लिया जाता रहा है।

हम सभी शिक्षकों को चाहिए कि अपने विद्यार्थियों के हित में जो भी बेहतर से बेहतर अवसर हों उनकी जानकारी उन तक पहुंचाते हुए उन्हें उसके लिए तैयार भी किया जाए ! श्रीमती उषा शर्मा को उनके इस नेक कार्य के लिए साधुवाद और अन्य शिक्षक साथियों से भी अपेक्षा है कि वे भी अपने बच्चों को आगे बढाने के संबंध में पूरा प्रयास करेंगे !

एजेंडा नौ: समुदाय/ पड़ोसी शिक्षक द्वारा स्कूलों में संयुक्त रूप से निरीक्षण

राज्य में वर्तमान में FLN के लक्ष्यों को प्राप्त करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस हेतु हमने कक्षा पहली से तीसरी तक भाषा और गणित के लिए टूल बनाकर सभी शालाओं को भेजा है। इस टूल में कक्षावार, विषयवार एवं विभिन्न दक्षतावार विभिन्न प्रश्न दिए गए हैं। शिक्षकों को चाहिए कि आने वाले समय में सभी बच्चों (शाला के भीतर एवं बाहर) में ये मूलभूत दक्षताएं सभी बच्चों में आगामी एक दो माह के भीतर हासिल हो जाए। इसके लिए आपको समुदाय के पढ़े-लिखे सदस्यों एवं माताओं का भी सहयोग लेना होगा। कुल बच्चों में से कितने बच्चों को ये दक्षताएं हासिल हो गयी इसका रिकार्ड रखना होगा। शेष छूट रहे बच्चों की सीख चुके बच्चों के साथ जोड़ी बनाकर उन्हें एक समयसीमा देते हुए सीखने-सिखाने की जिम्मेदारी देवें, उपरोक्त सभी मुद्दों को सिखाने एवं सीखने में सहयोग हेतु दो दो बच्चों की जोड़ी बनाकर आपस में एक दूसरे से सीखने की जिम्मेदारी देवें।

ध्यान रखें इस दिशा में आपके द्वारा किया गया सार्थक ईमानदार प्रयास हमें, हमारे राज्य को शिक्षा में पीछे रहने के दाग को दूर करने में मदद कर सकेगा। हम सबके द्वारा किया गया प्रयास हमें बहुत ऊंचाइयां दे सकेगा। पानी से भाप की शक्ति जो कि एक रेल को खींच सकता है, प्राप्त करना है तो 99 डिग्री से काम नहीं चलेगा, हमें पानी को सौ डिग्री तक गर्म करना ही होगा तभी उससे हमें भाप की ताकत एवं क्षमता मिल सकेगी,

एजेंडा दस: स्कूलों में इस अंक का फोलो-अप

- आप बच्चों के साथ निर्देशित लेखन (guided reading) का नियमित अभ्यास करवाएँगे।
- स्कूलों के निरीक्षण टूल में दिए गए प्रश्नों पर बच्चों से खूब सारा अभ्यास करवाएंगे।
- बच्चों के साथ बच्चों जैसे बनकर सीखने में सहयोग करने कुछ नवाचारी उपाय लागू करेंगे।
- बच्चों को उपयोगी व्यवसायिक शिक्षा देते हुए उसका दैनिक जीवन में उपयोग भी करवाएँगे।
- शिक्षकों के प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी को पुनः सक्रिय करेंगे एवं उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों को साझा करेंगे।
- अपने गाँव/ वार्ड को शून्य ड्राप-आउट गाँव/ वार्ड घोषित करवाए जाने हेतु प्रयास करेंगे।
- बच्चों को अपने जीवन में सफल होने हेतु विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होने हेतु तैयारी करवाएंगे।
- शाला प्रबन्धन समिति की बैठक हेतु आवश्यक तैयारी कर उन्हें सक्रिय रखेंगे।
- और सबसे महत्वपूर्ण- चर्चा पत्र को अधिक से अधिक शिक्षकों से डाउनलोड करवाते हुए उन्हें पढने एवं शाला में अपनाए जाने हेतु प्रेरित करेंगे।

0 0 0